

सब मन भाई ( ४७ )

आई आनंद जी रात सुखदाई रे।

गायो साई की मंगल वाधाई रे॥

वृन्दावन नृमल गगन है पूर्ण चन्द्रमा साई वदन है।

सुखनिवास भी शोभा सदन है

जहां रिमि झिमि रस सरसाई है॥

दास तारों की झिलिमिलि जोती जै जै धुनि चहूं ओर  
होती

सब चिन्त अंधेरी खोती यह रजिनी सब मन भाई है॥

हरी हंसि हंसि कुंजनि आए लखि लखि लालन को  
हर्षाए

बैठि गोद में मोद बढ़ाए सदां जीए सीय रघुराई रे॥

भई अमड़ि की पूरण आशा

मन कुमुदिन को भयो है विकासा

नाच गाय के करो हुलासा यह जोड़ी प्रभू ने मिलाई रे॥

सब हर्षित हैं नर नारी फूली चहूं दिशि है फुलवाड़ी

भए प्रघटु अबल बवतारी सदां ब्रान्हिड़ी बल बल जाई रे॥